

古代雅趣文化丛书

# 《酒颠》译注

李湛军

主编

卿至

肖嫵

译注

天若不爱酒，酒星不在天。地若不爱酒，地应无酒泉。天地既爱酒，爱酒不愧天。已闻清比圣，复道浊如贤。贤圣既已饮，何必求神仙。三杯通大道，一斗合自然。但得醉中趣，勿为醒者传。



中国书店

古代雅趣文化丛书

# 《酒颠》译注

李湛军

主编

卿至

肖嫵

译注



中国书店

## 图书在版编目 (CIP) 数据

《酒颠》译注 / 李湛军主编; 卿至, 肖嫵译注. —北京: 中国书店, 2018. 3  
ISBN 978-7-5149-1951-6

I. ①酒… II. ①李…②卿…③肖… III. ①酒文化-中国-古代  
②《酒颠》-译文③《酒颠》-注释 IV. ①TS971.22

中国版本图书馆 CIP 数据核字 (2018) 第 004468 号

## 古代雅趣文化丛书

### 《酒颠》译注

主 编: 李湛军

译 注: 卿 至 肖 嫵

责任编辑: 解文睿

---

出版发行: 中国书店

地 址: 北京市西城区琉璃厂东街 115 号

邮 编: 100050

印 刷: 廊坊文峰档案印务有限公司

开 本: 880mm×1230mm 1/32

印 张: 7.625

版 次: 2018 年 3 月第 1 版 2018 年 3 月第 1 次印刷

书 号: ISBN 978-7-5149-1951-6

定 价: 38.00 元

---

本版图书如有印装质量不合格者, 请与本社联系调换。

# 《古代雅趣文化丛书》

主编 李湛军

## 《古代雅趣文化丛书》编委会

李湛军 龙晓雯 郑 岩

滕家富 梁丽玮 丁树臣

石鸿印 谭巨龙 张东晓

## 《古代雅趣文化丛书》序言

中国古代优秀传统文化博大精深、源远流长，具有丰富的精神内涵和多彩的表现形式，是我们祖先在长期的历史文化发展进程中，逐渐构筑起来的浑厚文化体系，成为世界人类文明的重要组成部分。在中国古代优秀传统文化体系中，不仅有思想深邃的诸子百家学说，体系完备的儒家思想，也有凝结着古代先贤聪明智慧和文人情怀的典雅文化形态。这其中就包括中国古代长期历史进程中所形成的茶文化、酒文化、香文化、古琴文化、书斋清供文化等等雅趣文化形态。

纵观中国古代文化进程，无论是精行俭德的茶道精神、淡雅幽静的古琴意境，还是充满豪放情怀的品酒之风，都从不同的角度、不同的领域和不同的时空构成中国古代文人雅士的文化品格和文化情怀，也极大地丰富了中国古代传统文化的多元性和多层次文化结构。在这样的多彩多姿的雅趣文化形态中，深深地浸透着儒家思想的哲学意境，也充满了历代文人雅士的审美情趣和精神追求。而且在这些雅趣文化形态中，往往是古代深邃的精神内涵与多彩多姿的礼仪形式有机地融汇在一起，从雅致的文化情调中透射出古代传统文化的精神内核。所以，不管是琴棋书画，还是花鸟鱼虫，从一个个具象的点或具体的形态，融汇了中国古代文化的精华，古代文人学士以之陶冶情操、消闲怡情。

因此，我们弘扬古代优秀传统文化，不仅需要不断地深入地研究以儒家文化为主体、以佛道思想为辅的中国古代文化体系，也需要从历朝各代的文人雅趣文化意境中，探寻清雅灵动的雅致生活品格，并用更为当代化的表现形式传播于民众之中。

正是基于这样一个文化思考和文化追求，我们这套《古代雅趣文化丛书》，从凝聚着古代文人清雅精致风采的作品中，遴选出充分展现古人生活情趣、文化情怀、审美意境的经典代表作，诸如《茶经》《茶董》《茶论》《茶谱》《酒颠》《酒史》《酒经》以及《香谱》《续香谱》等，分别进行整理、校释和新注，并逐步出版刊行。

需要特别强调的是，我们整理出版《古代雅趣文化丛书》，着眼点更侧重于从历朝各代的雅趣文化形态中发掘和梳理经典、精致的文化内容，为今天人们陶冶情操、培育文化情趣、抬升文化情怀提供直接的文化元素。因此，我们在编辑出版项目的选择上，落点于当下人们的文化生活需要，甚至在编辑、整理形式上，也更多地强调这套丛书要适应当前民众阅读习惯、阅读爱好和文化时尚的需要。

作为首都图书出版销售骨干力量的北京发行集团，不仅拥有颇具实力的图书销售实体店，也统辖着中国书店出版社这样具有悠久传统的古籍专业出版机构。随着时代的发展和消费需求的变化，北京发行集团这样的国有文化企业，也需要从传统的为读书服务逐渐转向为读书人服务的新文化经营业态，更多地满足“人民日益增长的美好生活需要”。

《古代雅趣文化丛书》就是北京发行集团充分发挥集团所拥有的图书销售、图书出版以及文化品牌的综合优势，为满足当下民众文化消费个性化、经典化、精致化需要进行的积极探索。从某种意义上看，这样的对传统文化的发掘和整理，特别是以普及的形式加以弘扬，是提升文化自信的一种有益的方式。我们希望这套丛书，能够成为当代读者寻求文化时尚消费过程中，享受古代雅趣文化情调的“咖啡伴侣”。

A handwritten signature in black ink, appearing to read '李静' (Li Jing), written in a cursive, flowing style.

# 目 录

## 酒 颠 上 卷

|             |      |
|-------------|------|
| 持螯拍浮 .....  | (1)  |
| 登高落帽 .....  | (1)  |
| 一斛得凉州 ..... | (2)  |
| 三日不上省 ..... | (2)  |
| 妇人不听 .....  | (3)  |
| 白叟独全 .....  | (4)  |
| 江东步兵 .....  | (4)  |
| 兖州八伯 .....  | (5)  |
| 昆仑觞 .....   | (6)  |
| 青田壶 .....   | (6)  |
| 非类共饮 .....  | (7)  |
| 无偶相邀 .....  | (7)  |
| 时复中圣人 ..... | (8)  |
| 痛饮读离骚 ..... | (9)  |
| 引著胜地 .....  | (10) |
| 请赠醉侯 .....  | (10) |
| 公明三斗 .....  | (11) |
| 子干一石 .....  | (12) |

|              |      |
|--------------|------|
| 贵要废人饮 .....  | (12) |
| 形神不相亲 .....  | (13) |
| 抱瓮酿 .....    | (13) |
| 挂杖钱 .....    | (14) |
| 鹈鹕裘就市 .....  | (14) |
| 贯缁袍偿之 .....  | (15) |
| 西昌逸士 .....   | (15) |
| 云溪醉侯 .....   | (16) |
| 求步兵闻贮酒 ..... | (16) |
| 爱仆射宜勿饮 ..... | (17) |
| 一斗逍遥 .....   | (18) |
| 三升可恋 .....   | (19) |
| 瓮大成 .....    | (20) |
| 酒天地 .....    | (20) |
| 幸为酒壶 .....   | (21) |
| 速营糟丘 .....   | (22) |
| 好事问奇 .....   | (22) |
| 益酒止量 .....   | (23) |
| 与驹对饮 .....   | (23) |
| 召吏饮杖 .....   | (24) |
| 饮尽踏银海 .....  | (25) |
| 醉如浪中船 .....  | (25) |

|              |      |
|--------------|------|
| 醉龙 .....     | (26) |
| 鹤觞 .....     | (26) |
| 得秫不了曲蘖 ..... | (27) |
| 谈笑不及势利 ..... | (27) |
| 渊明大适 .....   | (28) |
| 杰公善别 .....   | (29) |
| 废戒墓前自杖 ..... | (30) |
| 依旨肆中求之 ..... | (30) |
| 三斗壮胆 .....   | (31) |
| 千日方醒 .....   | (32) |
| 斗酒濯足 .....   | (33) |
| 车轮刮颈 .....   | (33) |
| 避贤乐圣 .....   | (34) |
| 祠杜配焦 .....   | (34) |
| 醉胜人醒 .....   | (35) |
| 酒可忘忧 .....   | (35) |
| 兄弟匡坐 .....   | (36) |
| 石苏相高 .....   | (37) |
| 病叶狂花 .....   | (37) |
| 囚星焚日 .....   | (38) |
| 乐余年 .....    | (38) |
| 驱俗态 .....    | (39) |
| 高阳池 .....    | (40) |
| 莲花碧 .....    | (41) |
| 玉山倾 .....    | (41) |
| 金罍贮 .....    | (41) |

|              |      |
|--------------|------|
| 声闻不醒 .....   | (42) |
| 谈谐不乱 .....   | (42) |
| 醉语弥谨 .....   | (42) |
| 酒言可喜 .....   | (43) |
| 酒吃 .....     | (43) |
| 酒笔 .....     | (44) |
| 三日仆射 .....   | (44) |
| 失一老兵 .....   | (45) |
| 酒家南董 .....   | (45) |
| 酒名和劲 .....   | (46) |
| 醉吟九百首 .....  | (46) |
| 俊逸为三绝 .....  | (47) |
| 此中惟宜此物 ..... | (47) |
| 业饮遑恤其他 ..... | (48) |
| 青山白云醉死 ..... | (48) |

## 酒 颠 下 卷

|             |      |
|-------------|------|
| 一夕千觞 .....  | (49) |
| 酒垆酣畅 .....  | (49) |
| 醉圣 .....    | (50) |
| 酒气从指出 ..... | (51) |
| 酒中三昧 .....  | (51) |
| 九酝消肠 .....  | (52) |
| 崑峨我尔 .....  | (52) |
| 贤鄙为酣 .....  | (53) |

|             |      |               |      |
|-------------|------|---------------|------|
| 醉以头书 .....  | (53) | 醉乡无税 .....    | (69) |
| 酒因境多 .....  | (54) | 欢饮无言 .....    | (70) |
| 子字其父 .....  | (54) | 酒徒非儒 .....    | (71) |
| 中酒味 .....   | (55) | 开愁锁 .....     | (71) |
| 碧筒杯 .....   | (55) | 验醉针 .....     | (72) |
| 解忧不死 .....  | (56) | 饮有术 .....     | (72) |
| 金龟换酒 .....  | (57) | 司业酒钱 .....    | (73) |
| 车辖投井 .....  | (58) | 每春颠饮 .....    | (73) |
| 华独坐 .....   | (58) | 玉树临风 .....    | (74) |
| 恶客漫郎 .....  | (59) | 万异冥 .....     | (74) |
| 王坐堕帻 .....  | (60) | 但言饮几日 .....   | (75) |
| 妻常对饮 .....  | (60) | 醉引金吾句 .....   | (75) |
| 巢饮海棠枝 ..... | (60) | 少游神物 .....    | (76) |
| 汉书下酒 .....  | (61) | 痴汉戒饮 .....    | (77) |
| 狂何必酒 .....  | (62) | 浊醪天地宽 .....   | (77) |
| 酿具淫具 .....  | (62) | 饮量过当世 .....   | (78) |
| 役夫与游 .....  | (63) | 酒酣怀古人莫测 ..... | (78) |
| 甘苦沉沦 .....  | (64) | 通人达士累于此 ..... | (79) |
| 剧饮藻思 .....  | (64) | 俸余无留 .....    | (80) |
| 赐换骨醪 .....  | (65) | 三脏可活 .....    | (80) |
| 恐用不尽 .....  | (65) | 呵掖挠睡 .....    | (81) |
| 夫妇善诗酒 ..... | (66) | 酒竭饮醋 .....    | (81) |
| 狗窦中大叫 ..... | (67) | 蛙鸣当鼓吹 .....   | (82) |
| 醉伏御筵 .....  | (68) | 瓯醴成川渠 .....   | (82) |
| 洪崖来饮 .....  | (68) | 登屋歌哭 .....    | (83) |
| 醉乡日月 .....  | (69) | 盏中游妓 .....    | (83) |

|              |      |
|--------------|------|
| 吐筇篨 .....    | (84) |
| 每醉八日 .....   | (85) |
| 酒乡贫更入 .....  | (85) |
| 捕博饮 .....    | (86) |
| 醉髡 .....     | (86) |
| 对酒思公荣 .....  | (87) |
| 醉舞与狗斗 .....  | (88) |
| 黍麦低昂 .....   | (88) |
| 再韵解嘲 .....   | (89) |
| 河朔避暑 .....   | (90) |
| 饮不醉钱无穷 ..... | (90) |
| 欲倾家酿 .....   | (91) |
| 每出饮数日 .....  | (92) |
| 以酒濡发歌 .....  | (92) |
| 月给千壶 .....   | (93) |
| 齑汁美仙厨 .....  | (93) |
| 交饮各数斗 .....  | (94) |
| 二超 .....     | (95) |
| 在省常醉 .....   | (95) |
| 白鸡盏 .....    | (96) |
| 凝如绿玉 .....   | (96) |
| 垂帙痛饮 .....   | (97) |
| 门扉下出 .....   | (97) |
| 茶癖酒狂 .....   | (98) |
| 醉吟先生 .....   | (98) |
| 簇酒 .....     | (99) |

|              |       |
|--------------|-------|
| 不斋醉如泥 .....  | (99)  |
| 饮以壶瓠 .....   | (99)  |
| 荆州三酒 .....   | (100) |
| 华山对饮诗 .....  | (100) |
| 发狂坐井中 .....  | (101) |
| 醉有分别 .....   | (101) |
| 南中女酒 .....   | (102) |
| 叔夜杯景山枪 ..... | (103) |
| 酣酿川 .....    | (103) |

## 酒颠补 上卷

以下七十三则补叙酒人

|            |       |
|------------|-------|
| 遗冠雪政 ..... | (105) |
| 夜辱乐身 ..... | (106) |
| 焉用圣人 ..... | (107) |
| 易内而饮 ..... | (107) |
| 窟室夜饮 ..... | (108) |
| 圣贤能饮 ..... | (108) |
| 最欢一石 ..... | (109) |
| 司谏醉舞 ..... | (110) |
| 禁中大噓 ..... | (112) |
| 士卒沦没 ..... | (112) |
| 去衣露形 ..... | (113) |
| 远别能饮 ..... | (113) |
| 不用常杯 ..... | (114) |

|             |       |            |       |
|-------------|-------|------------|-------|
| 糟肉堪久 .....  | (115) | 水洒群臣 ..... | (132) |
| 自号上顿 .....  | (115) | 瓮缚吏部 ..... | (132) |
| 建康醇美 .....  | (115) | 酣法何得 ..... | (133) |
| 文饮席两美 ..... | (116) | 糟浆逆鼻 ..... | (134) |
| 生活似胜 .....  | (117) | 宴游玄圃 ..... | (134) |
| 师阮步兵 .....  | (117) | 神全不慑 ..... | (135) |
| 盗窃求乞 .....  | (118) | 酒池肉林 ..... | (136) |
| 盐酒同味 .....  | (119) | 抵破书案 ..... | (136) |
| 髻金叵罗 .....  | (119) | 面折同列 ..... | (137) |
| 醉舞不止 .....  | (120) | 搏击左右 ..... | (137) |
| 莫吐相茵 .....  | (120) | 携樽登览 ..... | (138) |
| 从事沐师 .....  | (121) | 宣劝灌死 ..... | (139) |
| 曲蘖摧人 .....  | (122) | 洗梨花妆 ..... | (139) |
| 二盘无余 .....  | (123) | 濯曲蘖肠 ..... | (140) |
| 簇器并饮 .....  | (123) | 鼻尖挑魔 ..... | (140) |
| 欲视别肠 .....  | (124) | 毛发识味 ..... | (141) |
| 饮冬瓜片 .....  | (125) | 携听黄鹂 ..... | (141) |
| 后宫醉妆 .....  | (126) | 夺履饮酒 ..... | (142) |
| 君臣欢笑 .....  | (127) | 每日邀宾 ..... | (142) |
| 饮玉莲杯 .....  | (127) | 争春大宴 ..... | (143) |
| 饮人狂药 .....  | (128) | 量广鸡舌 ..... | (144) |
| 花前醉乡 .....  | (129) | 醉用鲛胎 ..... | (144) |
| 红友黄封 .....  | (129) | 少延清欢 ..... | (145) |
| 杯贤勺圣 .....  | (130) | 一客一婢 ..... | (145) |
| 白掷剧饮 .....  | (130) | 金牌盈座 ..... | (145) |
| 歌呼和吏 .....  | (131) | 吞花卧酒 ..... | (146) |

|            |       |
|------------|-------|
| 鹿肠悬注 ..... | (146) |
| 双珠为吉 ..... | (147) |
| 九吐为神 ..... | (148) |
| 乌梅解醒 ..... | (148) |
| 毛诗代烛 ..... | (148) |
| 晚年旧好 ..... | (149) |
| 争豪歌舞 ..... | (149) |
| 花露润肺 ..... | (150) |

## 酒 颠 补 中 卷

以下四十二则补叙酒品

|            |       |
|------------|-------|
| 酒之始终 ..... | (151) |
| 酒之好恶 ..... | (151) |
| 古名醴酪 ..... | (152) |
| 始作醪味 ..... | (152) |
| 五齐之名 ..... | (153) |
| 九酝之法 ..... | (154) |
| 天之美禄 ..... | (154) |
| 人之欢伯 ..... | (155) |
| 酿饮诸名 ..... | (155) |
| 华夷众品 ..... | (156) |
| 兰英 .....   | (157) |
| 桑落 .....   | (158) |
| 玉薤 .....   | (158) |
| 醑醢 .....   | (159) |

|            |       |
|------------|-------|
| 鄮渌 .....   | (159) |
| 郸筒 .....   | (160) |
| 箬下 .....   | (160) |
| 宜城 .....   | (161) |
| 曲阿 .....   | (161) |
| 梨花 .....   | (162) |
| 竹叶 .....   | (162) |
| 君山 .....   | (163) |
| 蓬莱 .....   | (164) |
| 金液 .....   | (164) |
| 玉饧 .....   | (165) |
| 琬琰之膏 ..... | (165) |
| 瑶琨之碧 ..... | (166) |
| 玄碧之香 ..... | (166) |
| 琼飴 .....   | (167) |
| 琼苏 .....   | (167) |
| 仙浆 .....   | (167) |
| 瑞露 .....   | (168) |
| 洪梁 .....   | (168) |
| 千里 .....   | (169) |
| 楮汁 .....   | (169) |
| 龙膏 .....   | (170) |
| 澄明 .....   | (170) |
| 露浆桂醑 ..... | (171) |
| 停花悬树 ..... | (171) |
| 椒花 .....   | (172) |

|            |       |
|------------|-------|
| 檇汁 .....   | (173) |
| 夷酿 .....   | (173) |
| 以下七则补叙觞政   |       |
| 举白浮君 ..... | (174) |
| 三三两两 ..... | (174) |
| 驼驮鼈 .....  | (175) |
| 白玉石 .....  | (176) |
| 字旁为率 ..... | (177) |
| 体物狎韵 ..... | (177) |
| 卦名证人 ..... | (178) |
| 以下七则补叙杯勺   |       |
| 鹊尾指人 ..... | (179) |
| 鹤足倾侧 ..... | (179) |
| 自暖杯 .....  | (179) |
| 又 .....    | (180) |
| 破壶杯 .....  | (181) |
| 碧瑶杯 .....  | (181) |
| 鹳鹑卮 .....  | (182) |

## 酒 颠 补 下 卷

### (以下补叙诗文)

饮酒

晋·陶渊明 .....

对酒

梁·张率 .....

田饮引

梁·朱异 .....

对酒

陈·张正见 .....

独酌谣

陈·沈炯 .....

赐魏征

唐太宗 .....

看酿酒

唐·王绩 .....

咏酒

唐·李峤 .....

饮中八仙歌

唐·杜甫 .....

湖中对酒

唐·张谓 .....

待酒

唐·李白 .....

山中与幽人对酌

前人 .....

独酌

前人 .....

月下独酌三首

前人 .....

将进酒

前人 .....

|          |             |           |             |
|----------|-------------|-----------|-------------|
| 将进酒      |             | 酒泉        | ..... (209) |
| 唐·李贺     | ..... (199) | 酒筵        | ..... (210) |
| 与诸客空腹饮   |             | 酒床        | ..... (211) |
| 唐·白居易    | ..... (200) | 酒垆        | ..... (211) |
| 何处难忘酒二首  |             | 酒楼        | ..... (212) |
| 前人       | ..... (201) | 酒旗        | ..... (212) |
| 不如来饮酒四首  |             | 酒樽        | ..... (213) |
| 前人       | ..... (202) | 酒城        | ..... (213) |
| 劝酒       |             | 酒乡        | ..... (214) |
| 前人       | ..... (203) | 容南太守合酒诗并序 |             |
| 劝酒       |             | 宋·罗大经     | ..... (214) |
| 唐·孟郊     | ..... (204) | 月下传杯      |             |
| 劝酒       |             | 宋·杨诚斋     | ..... (218) |
| 唐·李敬方    | ..... (205) | 酒箴        |             |
| 劝酒       |             | 汉·扬雄      | ..... (219) |
| 唐·武瓘     | ..... (205) | 与曹操书      |             |
| 酒中十咏序    |             | 汉·孔融      | ..... (220) |
| 唐·皮日休    | ..... (206) | 又书        |             |
| 和皮袭美酒中十咏 |             | 前人        | ..... (222) |
| 唐·陆龟蒙    |             | 与兄子秀书     |             |
| 酒星       | ..... (208) | 梁·陈暄      | ..... (223) |

## 酒颠 上卷

### 持螯拍浮

毕卓<sup>①</sup>字茂世，为吏部郎。尝云：“一手持蟹螯，一手举酒杯；拍浮<sup>②</sup>酒池中，便足了一生。”

译文：

毕卓字茂世，官任吏部郎。他曾说：“一手持蟹螯，一手举酒杯；诗酒中娱情，一生已无憾。”

### 登高落帽

孟嘉<sup>③</sup>字万年，好饮。桓宣武尝问：“万年何为嗜酒？”孟答曰：“公但未知酒中趣耳。”九日偕宣武宴龙山，酒酣落帽。著作郎孙盛为文嘲之。

译文：

孟嘉字万年，很爱喝酒。桓温曾经

① 毕卓，东晋官员，字茂世。「八王之乱」时为保身，扮成一个不问政事、不爱权势、饮酒自乐的人，后因饮酒而废职。

② 拍浮，浮游游泳。后以其为诗酒娱情之典。

③ 孟嘉，字万年，东晋时期名士、官员，著名田园诗人陶渊明的外祖父。孟嘉喜欢酣饮，但酒多不乱。罗含曾为孟嘉赋诗说：「孟嘉善饮酒，不失其本意。」

②

文宣，指文宣帝高洋（五二六—五五九年），字子进，南北朝时期北齐政权的开国皇帝。

①

张让（卒于一八九年），东汉宦官，在职时以搜刮暴敛、骄纵贪婪见称。汉灵帝极为宠信他，常谓「张常侍是我父」。

问孟嘉：“酒有什么好的，让先生如此嗜好？”孟嘉笑着回答：“您有此一问，是因为还没体味到酒中的意趣罢了。”有一天，孟嘉等人偕同桓温在龙山吃宴，喝多之后竟然连帽子都丢了。著作郎孙盛为此事还写了一篇短文来嘲弄孟嘉。

## 一斛得凉州

孟佗以菖蒲酒一斛遗张让<sup>①</sup>，即拜凉州刺史。子瞻云：“将军百战竟不侯，伯良一斛得凉州。”

译文：

东汉孟佗将当时中原稀少的菖蒲酒赠送给张让，因此被提携成为凉州刺史。北宋苏轼读史时看到此段记载，曾经感叹道：“将军百战疆场尚且不得封侯，孟佗一斛菖蒲酒竟能掌管凉州。”

## 三日不上省

皇甫亮三日不上省，文宣<sup>②</sup>亲诘其故。亮曰：“一日雨，一日醉，一日病酒。”

译文：

皇甫亮一连三天不到内阁上班，文宣帝